IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भागलपुर जिला (बिहार) में बाल लिंगानुपात का स्थानिक प्रतिरूप एवं परिवर्तन का विश्लेषण

डॉ. मनमोहन कुमार

विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश

बाल लिंगानुपात किसी क्षेत्र में लैंगिक समानता एवं सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण जनांकिकीय सूचक है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिहार के भागलपुर जिले में वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य बाल लिंगानुपात के स्थानिक वितरण, परिवर्तन तथा प्रखंडों के मध्य क्षेत्रीय भिन्नताओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनका स्रोत भारत की जनगणना 2001 एवं 2011 तथा जिला जनगणना पुस्तिका है। अध्ययन में प्रखंडवार बाल लिंगानुपात का तुलनात्मक विश्लेषण, परिवर्तन,क्षेत्रीय भिन्नताओं तथा विषयगत मानचित्रों के माध्यम से स्थानिक प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है। परिणामों से ज्ञात होता है कि अध्ययन अवधि में जिले के अधिकांश प्रखंडों में बाल लिंगानुपात में सुधार हुआ, किन्तु प्रखंडों के मध्य उल्लेखनीय क्षेत्रीय असमानताएँ विद्यमान रहीं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात का वितरण स्थानिक रूप से असमान है तथा विभिन्न प्रखंडों में परिवर्तन की तीव्रता भी भिन्न-भिन्न रही। यह स्थिति स्थानीय सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संबंधी कारकों के प्रभाव को इंगित करती है।

शब्द कुंजी: बाल लिंगानुपात, स्थानिक वितरण, क्षेत्रीय भिन्नता, जनांकिकीय सूचक, तुलनात्मक विश्लेषण

1. परिचय

लिंगानुपात किसी भी समाज की जनसंख्या संरचना तथा सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण जनांकिकीय सूचक है। विशेष रूप से 0–6 वर्ष आयु वर्ग का बाल लिंगानुपात समाज में बालक एवं बालिका के प्रति दृष्टिकोण, लैंगिक समानता तथा सामाजिक-आर्थिक विकास की स्थिति को प्रतिबिंबित करता है। बाल लिंगानुपात में निरंतर गिरावट सामाजिक असंतुलन, लैंगिक भेदभाव तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी गंभीर समस्याओं की ओर संकेत करती है। इसलिए बाल लिंगानुपात का अध्ययन केवल जनसंख्या भूगोल के दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं क्षेत्रीय विकास के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत में विगत कुछ दशकों के दौरान आर्थिक एवं शैक्षिक विकास के बावजूद अनेक राज्यों एवं जिलों में बाल लिंगानुपात में कमी देखी गई है। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा *बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना* तथा *पूर्व गर्भाधान एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीक (PCPNDT) अधिनियम* जैसी विभिन्न योजनाएँ एवं कानूनी प्रावधान लागू किए गए हैं। इसके बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में बाल लिंगानुपात की स्थिति समान नहीं है तथा क्षेत्रीय विषमताएँ आज भी विद्यमान हैं।

बिहार एक जनसंख्या बहुल राज्य है, जहाँ सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक विकास में जिलों एवं प्रखंडों के मध्य उल्लेखनीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं। भागलपुर जिला ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ ग्रामीण एवं शहरी विशेषताओं का मिश्रित स्वरूप प्रस्तुत करता है। जिले के विभिन्न प्रखंडों में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, सामाजिक जागरूकता तथा आर्थिक विकास के स्तर में अंतर होने के कारण बाल लिंगानुपात में

भी क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिल सकती हैं। अतः इन भिन्नताओं का प्रखंड स्तर पर अध्ययन आवश्यक है, जिससे स्थानीय स्तर पर विद्यमान असंतुलनों की पहचान की जा सके। यद्यपि भारत तथा बिहार में बाल लिंगानुपात पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, परन्तु भागलपुर जिले के प्रखंड स्तर पर बाल लिंगानुपात के स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण से संबंधित अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। यह शोध इसी शोध-अंतर को ध्यान में रखते हुए जनगणना 2001 एवं 2011 के आँकड़ों के आधार पर भागलपुर जिले के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात के वितरण, समयानुसार परिवर्तन तथा क्षेत्रीय विषमताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष बालिका कल्याण, लैंगिक समानता तथा क्षेत्रीय विकास से संबंधित योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

2. साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिंगानुपात एवं बाल लिंगानुपात के स्थानिक प्रतिरूप, परिवर्तन तथा क्षेत्रीय विषमताओं के संबंध में अनेक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों से विषय की पृष्ठभूमि, प्रमुख निष्कर्षों एवं विद्यमान शोध-अंतर को समझने में सहायता मिलती है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

सिंह एवं कौर (2017) ने विभिन्न जिलों के लिंगानुपात का विश्लेषण करते हुए पाया कि जिलावार स्तर पर उल्लेखनीय क्षेत्रीय भिन्नताएँ विद्यमान हैं। शहरी क्षेत्रों में समग्र लिंगानुपात अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया, किन्तु बाल लिंगानुपात में गंभीर गिरावट दर्ज की गई, जो प्रौद्योगिकी-सहायित प्रसवपूर्व लिंग-निर्धारण एवं लिंग-चयन की बढ़ती प्रवृत्ति को इंगित करती है। **दैपुरिया एवं सिन्हा (2018)** ने भारत में लिंगानुपात की स्थिति तथा उससे संबंधित कानूनी प्रावधानों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि महिला शिक्षा, सामाजिक जागरूकता तथा सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन लिंगानुपात में सुधार के लिए अत्यंत आवश्यक है, जबकि अशिक्षा, लैंगिक भेदभाव तथा पुत्र-प्राथमिकता जैसी सामाजिक प्रवृत्तियाँ इसके प्रमुख अवरोधक हैं। **वंसिया (2018)** ने अनुसूचित जनजाति जनसंख्या के लिंगानुपात एवं बाल लिंगानुपात का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अनुसूचित जनजाति समुदाय का समग्र लिंगानुपात सामान्य जनसंख्या की तुलना में अपेक्षाकृत बेहतर था, किन्तु बाल लिंगानुपात में क्षेत्रीय तथा ग्रामीण-नगरीय स्तर पर उल्लेखनीय विषमताएँ विद्यमान थीं। अध्ययन में क्षेत्र-विशिष्ट नीतियों के निर्माण तथा जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता पर बल दिया गया। **कुमार एवं पांडेय (2019)** ने बिहार में शहरीकरण एवं लिंगानुपात के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि शहरीकरण के कारण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में सुधार हुआ है, किन्तु इससे पुत्र-प्राथमिकता में समान रूप से कमी नहीं आई तथा बालिकाओं के जीवित रहने की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो सका। **मिश्रा एवं रंजन (2020)** ने शहरी क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक कारकों एवं लिंगानुपात के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया। अध्ययन में निष्कर्ष निकाला गया कि मातृ शिक्षा, परिवार की आर्थिक स्थिति तथा प्रवासन जैसे कारक शहरी क्षेत्रों में लैंगिक असमानता एवं लिंगानुपात को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। **मिश्रा एवं झा (2022)** ने ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के शिशु लिंगानुपात का स्थानिक विश्लेषण किया। अध्ययन में विभिन्न जिलों के मध्य शिशु लिंगानुपात में स्पष्ट क्षेत्रीय विषमताएँ पाई गईं। साथ ही यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता तथा सामाजिक-आर्थिक विकास शिशु लिंगानुपात को प्रभावित करने वाले प्रमुख निर्धारक हैं। **कुमार एवं यादव (2026)** ने अध्ययन में पाया कि वर्ष 2001–2011 के दौरान नगरीय लिंगानुपात में सुधार हुआ, जबकि राज्य एवं जिला स्तर पर, विशेषकर नगरीय क्षेत्रों में, बाल लिंगानुपात में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई। अध्ययन में जिलों के मध्य स्पष्ट क्षेत्रीय विषमताएँ पाई गईं तथा यह निष्कर्ष निकाला गया कि केवल शहरीकरण से लैंगिक समानता सुनिश्चित नहीं होती। इसलिए बाल लिंगानुपात में सुधार हेतु जिला-विशिष्ट, लैंगिक-संवेदनशील नीतियों, प्रभावी कानूनी क्रियान्वयन तथा लक्षित सामाजिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता है।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोध राष्ट्रीय, राज्य अथवा विशेष सामाजिक समूहों तक सीमित हैं। जबकि भागलपुर जिले के प्रखंड स्तर पर बाल लिंगानुपात के स्थानिक प्रतिरूप, दशकीय परिवर्तन एवं क्षेत्रीय विषमताओं का विस्तृत अध्ययन अपेक्षाकृत उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर को पूरा करने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन क्षेत्र

भागलपुर जिला बिहार राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। इसका भौगोलिक विस्तार लगभग 25°07′ से 25°30′ उत्तरी अक्षांश तथा 86°37′ से 87°30′ पूर्वी देशांतर के मध्य है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 2,569 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में खगड़िया एवं मधेपुरा, पूर्व में कटिहार, पश्चिम में मुंगेर तथा दक्षिण में बांका एवं झारखंड राज्य का गोड्डा जिला स्थित है। गंगा नदी जिले के मध्य भाग से होकर प्रवाहित होती है, जो इसकी भौतिक एवं आर्थिक संरचना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। प्रशासनिक दृष्टि से भागलपुर जिला अनेक प्रखंडों में विभाजित है, जिनमें ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार की बस्तियाँ सम्मिलित हैं। जिले की जनसंख्या मुख्यतः कृषि पर आधारित है, जबकि रेशम उद्योग, लघु एवं कुटीर उद्योग, व्यापार तथा सेवा क्षेत्र भी स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवहन जैसी आधारभूत सुविधाओं का विकास विभिन्न प्रखंडों में समान नहीं है, जिसके कारण सामाजिक एवं आर्थिक विकास में क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भागलपुर जिले के सभी प्रखंडों को अध्ययन इकाई के रूप में चयनित किया गया है। बाल लिंगानुपात के स्थानिक वितरण एवं वर्ष 2001 से 2011 के मध्य हुए परिवर्तनों का विश्लेषण प्रखंड स्तर पर किया गया है। यह क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकीय विविधताओं से युक्त होने के कारण बाल लिंगानुपात के क्षेत्रीय प्रतिरूप एवं विषमताओं के अध्ययन के लिए उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करता है।

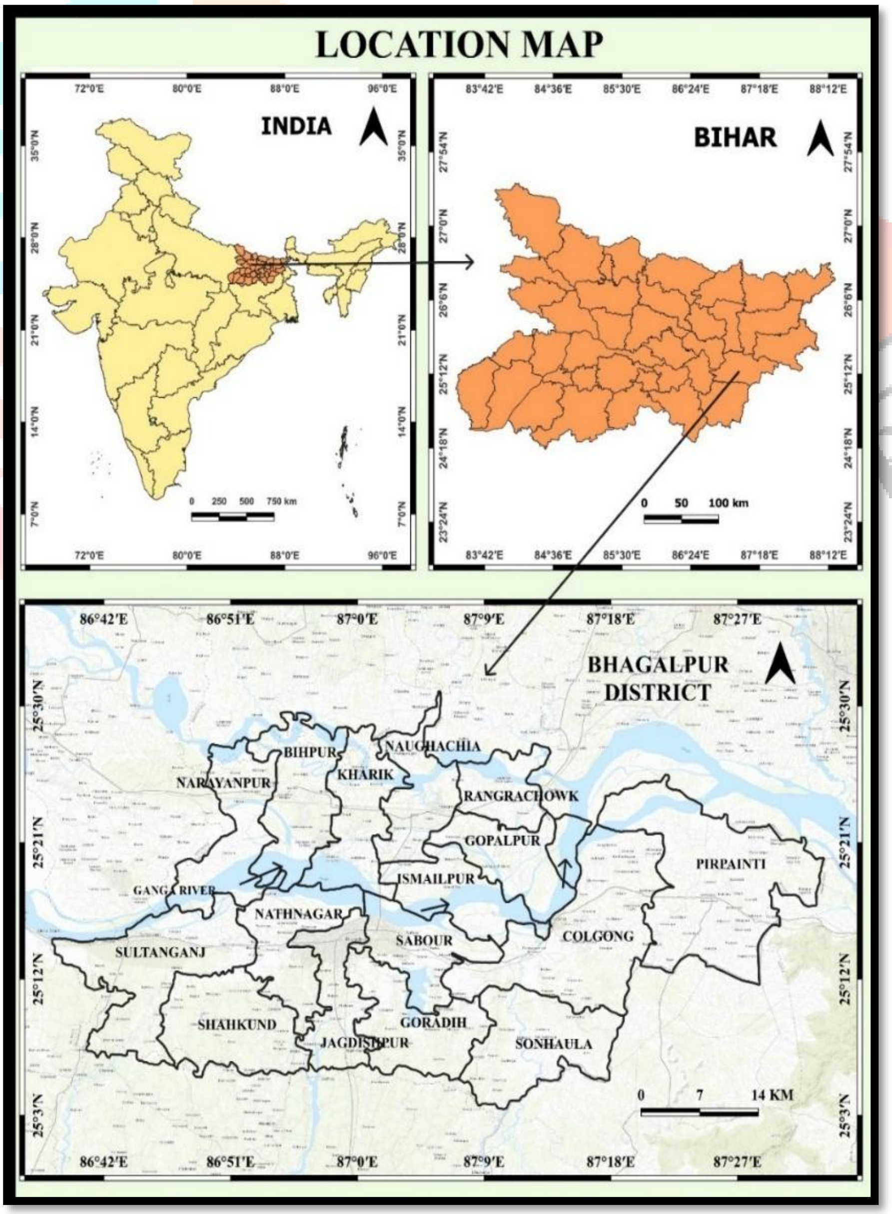

चित्र संख्या: 1

4. उद्देश्य

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य-

1. भागलपुर जिला के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात की स्थिति का मूल्यांकन करना।
2. वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य भागलपुर जिला में बाल लिंगानुपात में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. बाल लिंगानुपात के आधार पर भागलपुर जिला के प्रखंडों के मध्य क्षेत्रीय भिन्नताओं का अध्ययन करना।

5. आकड़े स्रोत एवं कार्यपद्धति

वर्तमान अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन के लिए आवश्यक आँकड़े मुख्यतः भारत की जनगणना 2001 एवं 2011, जिला जनगणना पुस्तिका (District Census Handbook), भागलपुर तथा प्राथमिक जनगणना सार (Primary Census Abstract) से प्राप्त किए गए हैं। अध्ययन में भागलपुर जिले के सभी प्रखंडों के 0–6 वर्ष आयु वर्ग के बालक एवं बालिका जनसंख्या तथा बाल लिंगानुपात से संबंधित आँकड़ों का उपयोग किया गया है। संग्रहित आँकड़ों को Microsoft Excel में व्यवस्थित एवं संसाधित कर सारणियों के रूप में प्रस्तुत किया गया तथा वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य बाल लिंगानुपात में हुए परिवर्तनों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। प्रखंडों के मध्य क्षेत्रीय भिन्नताओं को स्पष्ट करने के लिए क्रम वर्गीकरण की विधि अपनाई गई। इसके अतिरिक्त, QGIS सॉफ़्टवेयर की सहायता से बाल लिंगानुपात के स्थानिक वितरण एवं उसके परिवर्तनों को दर्शाने वाले विषयगत मानचित्र तैयार किए गए। इस कार्यपद्धति के माध्यम से भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात के स्थानिक प्रतिरूप, परिवर्तन तथा प्रखंडों के मध्य विद्यमान क्षेत्रीय विषमताओं का स्पष्ट एवं प्रभावी विश्लेषण किया गया है।

6. परिणाम और विश्लेषण

1. भागलपुर जिले के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात की स्थिति

बाल लिंगानुपात की स्थिति का आकलन करने के लिए भागलपुर जिले के 16 प्रखंडों के वर्ष 2001 एवं 2011 के बाल लिंगानुपात के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में 0-6 वर्ष आयु वर्ग के प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या को बाल लिंगानुपात के रूप में लिया गया है। तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 में भागलपुर जिले का औसत बाल लिंगानुपात 971 था। इस वर्ष प्रखंडवार बाल लिंगानुपात में उल्लेखनीय स्तर दर्ज किए गए। इस्माइलपुर में सर्वाधिक 1050, जबकि सुल्तानगंज में न्यूनतम 944 बाल लिंगानुपात दर्ज किया गया। इसके अतिरिक्त सन्हौला में 1001, खरीक में 989, पीरपैंती में 980 तथा नारायणपुर में 975 का बाल लिंगानुपात पाया गया। इससे पता चलता है कि 2001 में जिले के अधिकांश प्रखंडों में बाल लिंगानुपात 900 से अधिक था। वर्ष 2011 में भागलपुर जिले का बाल लिंगानुपात 966 रहा। इस वर्ष सर्वाधिक बाल लिंगानुपात बिहपुर (963) में दर्ज किया गया। इसके बाद रंगरा चौक (951), गोपालपुर (948), पीरपैंती (945), कहलगाँव (945) तथा गोराडीह (945) का स्थान इस्माइलपुर (918) में न्यूनतम बाल लिंगानुपात दर्ज किया गया। अन्य प्रखंडों में खरीक 923, नवगछिया 924, शाहकुंड 927 तथा जगदीशपुर 930 रहे। समग्र रूप से देखा जाए तो दोनों जनगणना वर्षों में भागलपुर जिले के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात 900 से अधिक रहा। वर्ष 2001 में जिले का उच्चतम मान 1050 तथा वर्ष 2011 में 963 रहा। इसी प्रकार न्यूनतम मान 2001 में 944 तथा 2011 में 918 दर्ज किया गया। यह स्थिति दर्शाती है कि अध्ययन क्षेत्र में बाल लिंगानुपात की स्थिति को समझने के लिए प्रखंड स्तर पर आँकड़ों का अध्ययन आवश्यक है। अतः भागलपुर जिले के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात की स्थिति दोनों जनगणना वर्षों में 900 से अधिक रही, किंतु प्रखंडवार मान अलग-अलग रहे। वर्ष 2001 में इस्माइलपुर का मान सर्वाधिक तथा वर्ष 2011 में बिहपुर का मान सर्वाधिक रहा। इस प्रकार, बाल लिंगानुपात की स्थिति का आकलन करने पर जिले के प्रखंडों में अलग-अलग स्तर के मान पाए जाते हैं।

तालिका 1: भागलपुर जिला में प्रखंडवार बाल लिंगानुपात, 2001 एवं 2011

क्र.सां.	प्रखंड	बाल लिंगानुपात (0–6 वर्ष आयु वर्ग)		
		2001	2011	परिवर्तन
1.	नारायणपुर	975	933	-42
2.	बिहपुर	946	963	+17
3.	खरीक	989	923	-66
4.	नवगछिया	958	924	-34
5.	रंगरा चौक	972	951	-21
6.	गोपालपुर	968	948	-20
7.	पीरपैंती	980	945	-35
8.	कहलगाँव	947	945	-2
9.	इस्माइलपुर	1050	918	-132
10.	सबौर	971	939	-32
11.	नाथनगर	966	935	-31
12.	सुल्तानगंज	944	937	-7
13.	शाहकुंड	960	927	-33
14.	गोराडीह	968	945	-23
15.	जगदीशपुर	959	930	-29
16.	सन्हौला	1001	944	-57
भागलपुर जिला		**971**	**966**	-5

स्रोत: भागलपुर जिला जनगणना पुस्तिका (2001 और 2011)

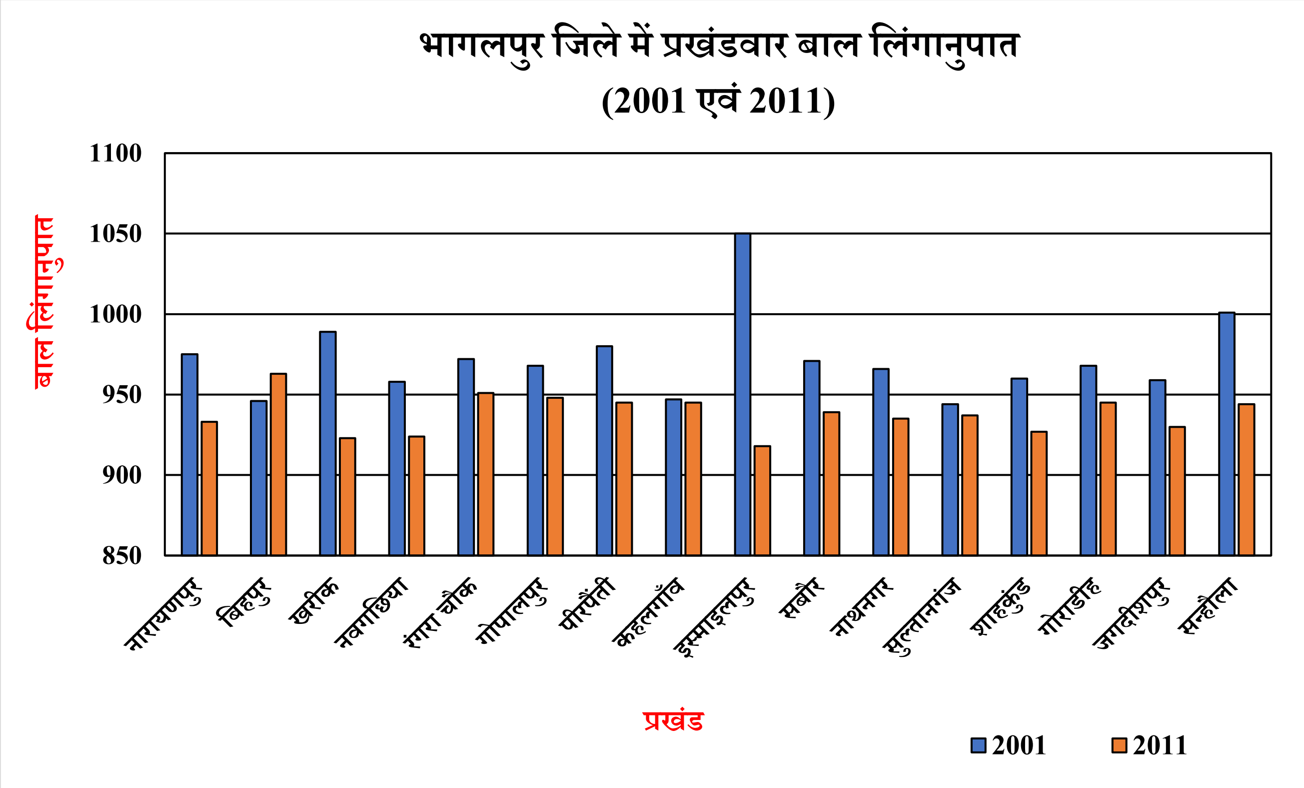

चित्र संख्या: 2

2. वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात में हुए परिवर्तन

दिए गये **तालिका 1** मे,वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य भागलपुर जिले के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान जिले में समग्र रूप से बाल लिंगानुपात में गिरावट दर्ज की गई। भागलपुर जिले का बाल लिंगानुपात वर्ष 2001 में 971 था, जो वर्ष 2011 में घटकर 966 रह गया। इस प्रकार एक दशक के दौरान जिले के बाल लिंगानुपात में 5 अंकों की कमी हुई। यह परिवर्तन दर्शाता है कि जिले के स्तर पर बाल लिंगानुपात की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। हालांकि, प्रखंड स्तर पर परिवर्तन की दिशा और मात्रा समान नहीं रही तथा कुछ प्रखंडों में अपेक्षाकृत अधिक गिरावट, जबकि कुछ में मामूली परिवर्तन देखा गया। प्रखंडवार आँकड़ों से ज्ञात होता है कि कुल 16 प्रखंडों में से 15 प्रखंडों में बाल लिंगानुपात में कमी दर्ज की गई, जबकि केवल बिहपुर प्रखंड में वृद्धि हुई। बिहपुर में वर्ष 2001 में बाल लिंगानुपात 946 था, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 963 हो गया। इस प्रकार इस प्रखंड में 17 अंकों की वृद्धि दर्ज की गई, जो अध्ययन क्षेत्र में एकमात्र सकारात्मक परिवर्तन है। इसके विपरीत, सबसे अधिक गिरावट इस्माइलपुर प्रखंड में पाई गई। इस्माइलपुर में वर्ष 2001 का बाल लिंगानुपात 1050 था, जो वर्ष 2011 में घटकर 918 हो गया। इस प्रकार एक दशक में यहाँ 132 अंकों की उल्लेखनीय कमी दर्ज हुई। इस्माइलपुर के बाद खरीक में 989 से घटकर 923 होने के कारण 66 अंकों की कमी, जबकि सन्हौला में 1001 से घटकर 944 होने के कारण 57 अंकों की कमी दर्ज की गई।

अन्य प्रखंडों में भी बाल लिंगानुपात में विभिन्न स्तर की गिरावट देखी गई। नारायणपुर में यह 975 से घटकर 933 हुआ, जिससे 42 अंकों की कमी हुई। पीरपैंती में 980 से घटकर 945 होने के कारण 35 अंकों की, जबकि नवगछिया में 958 से घटकर 924 होने के कारण 34 अंकों की कमी दर्ज की गई। इसी प्रकार शाहकुंड में 33 अंक, सबौर में 32 अंक, नाथनगर में 31 अंक तथा जगदीशपुर में 29 अंकों की कमी पाई गई। गोराडीह में बाल लिंगानुपात 968 से घटकर 945 हो गया, जिससे 23 अंकों की कमी दर्ज हुई। रंगरा चौक तथा गोपालपुर में क्रमशः 21 एवं 20 अंकों की गिरावट दर्ज की गई। कुछ प्रखंडों में बाल लिंगानुपात में अपेक्षाकृत कम परिवर्तन देखा गया। सुल्तानगंज में यह 944 से घटकर 937 हुआ, अर्थात् केवल 7 अंकों की कमी हुई। इसी प्रकार कहलगाँव में 947 से घटकर 945 होने के कारण मात्र 2 अंकों की कमी दर्ज की गई, जो सभी प्रखंडों में सबसे कम गिरावट थी। इससे पता चलता है कि अध्ययन अवधि में बाल लिंगानुपात में परिवर्तन की तीव्रता प्रखंडवार अलग-अलग रही। जहाँ कुछ प्रखंडों में बहुत अधिक गिरावट हुई, वहीं कुछ प्रखंडों में परिवर्तन अपेक्षाकृत मामूली रहा। समग्र रूप से देखा जाए तो वर्ष 2001–2011 के दौरान भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात का परिवर्तन मुख्यतः निम्नमुखी रहा। 16 प्रखंडों में से 15 में कमी

तथा केवल एक प्रखंड में वृद्धि होना इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। विशेष रूप से इस्माइलपुर, खरीक और सन्हौला में हुई बड़ी गिरावट अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर, बिहपुर में हुई वृद्धि सकारात्मक परिवर्तन को दर्शाती है। इस प्रकार अध्ययन अवधि के दौरान भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात में परिवर्तन एकसमान नहीं रहा, बल्कि प्रखंडों के अनुसार इसकी मात्रा और दिशा अलग-अलग रही। यह स्थिति बाल लिंगानुपात से संबंधित क्षेत्रीय स्तर पर आगे के अध्ययन तथा स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के विश्लेषण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

3. बाल लिंगानुपात के आधार पर भागलपुर जिले के प्रखंडों के मध्य क्षेत्रीय भिन्नता

भागलपुर जिले के प्रखंडों के मध्य बाल लिंगानुपात की क्षेत्रीय भिन्नताओं का अध्ययन करने के लिए वर्ष 2001 एवं 2011 के प्रखंडवार बाल लिंगानुपात का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। विश्लेषण को सरल एवं स्पष्ट बनाने के लिए प्रखंडों को तीन श्रेणियों में उच्च, मध्यम तथा निम्न में वर्गीकृत किया गया। वर्ष 2001 के लिए उच्च श्रेणी (950 एवं अधिक), मध्यम श्रेणी (931–949) तथा निम्न श्रेणी (930 से कम) निर्धारित की गई, जबकि वर्ष 2011 के लिए उच्च श्रेणी (950 एवं अधिक), मध्यम श्रेणी (930–949) तथा निम्न श्रेणी (930 से कम) निर्धारित की गई।

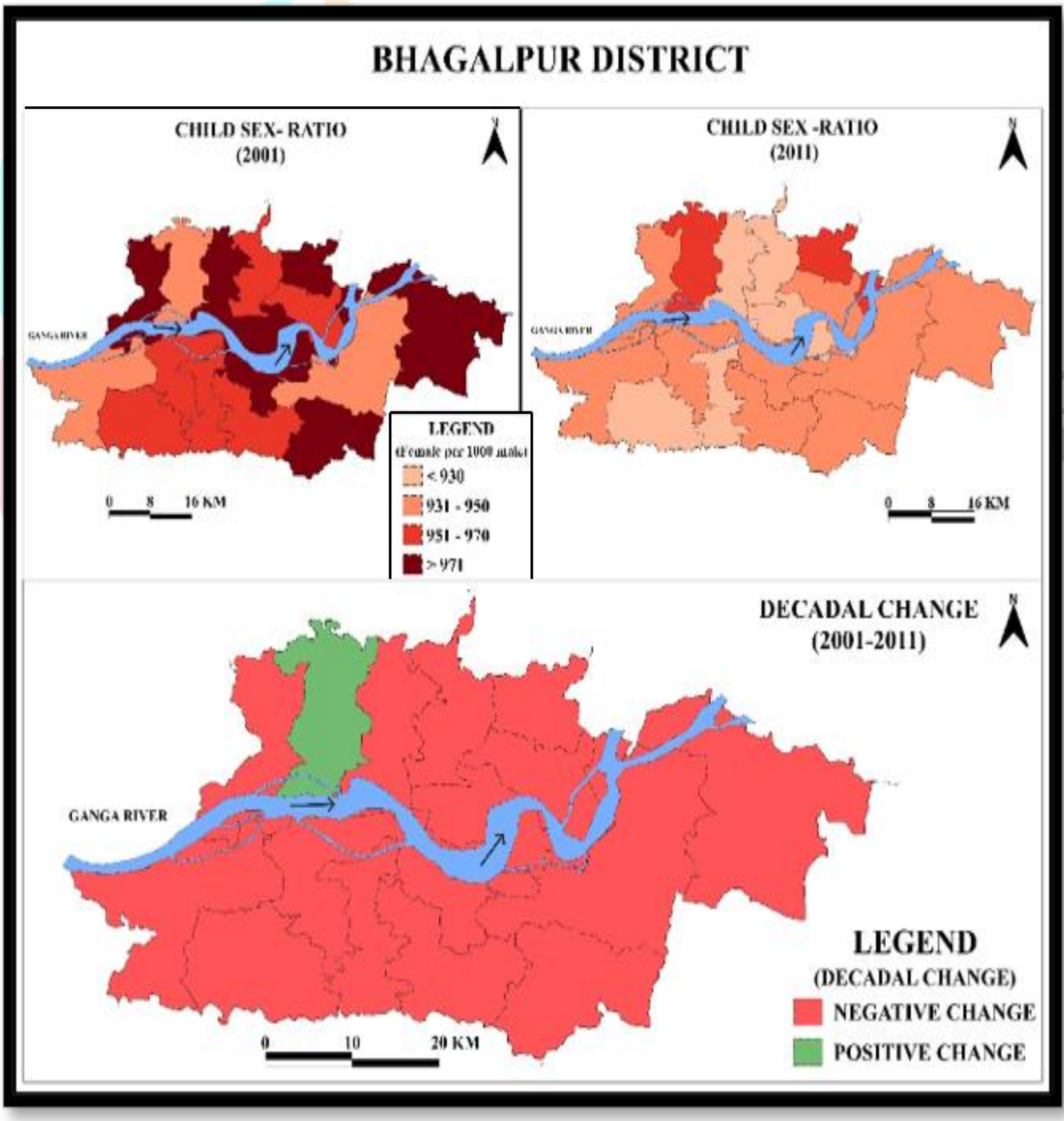

चित्र संख्याः 3

तालिका 3 : वर्ष 2001 एवं 2011 में बाल लिंगानुपात के आधार पर प्रखंडों का क्षेत्रीय वर्गीकरण

श्रेणी	बाल लिंगानुपात	वर्ष 2001 के प्रखंड	संख्या	वर्ष 2011 के प्रखंड	संख्या
उच्च	**950 एवं अधिक**	नारायणपुर (975), खरीक (989), नवगछिया (958), रंगरा चौक (972), गोपालपुर (968), पीरपैंती (980), इस्माइलपुर (1050), सबौर (971), नाथनगर (966), शाहकुंड (960), गोराडीह (968), जगदीशपुर (959), सन्हौला (1001)	**13**	बिहपुर (963), रंगरा चौक (951)	**2**
मध्यम	**949–931**	बिहपुर (946), कहलगाँव (947), सुल्तानगंज (944)	**3**	नारायणपुर (933), गोपालपुर (948), पीरपैंती (945), कहलगाँव (945), सबौर (939), नाथनगर (935), सुल्तानगंज (937), गोराडीह (945), जगदीशपुर (930), सन्हौला (944)	**10**
निम्न	**930 से कम**	—	**0**	खरीक (923), नवगछिया (924), इस्माइलपुर (918), शाहकुंड (927)	**4**
कुल	—	**16 प्रखंड**	**16**	**16 प्रखंड**	**16**

स्रोतः भागलपुर जिला जनगणना पुस्तिका (2001 और 2011)

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य भागलपुर जिले के प्रखंडों में बाल लिंगानुपात के आधार पर क्षेत्रीय संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। वर्ष 2001 में चार प्रखंड उच्च श्रेणी में थे, जिनमें इस्माइलपुर (1050), सन्हौला (1001), खरीक (989) तथा पीरपैंती (980) शामिल थे। इसके विपरीत वर्ष 2011 में उच्च श्रेणी में केवल दो प्रखंड बिहपुर (963) एवं रंगरा चौक (951) रह गए। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि में उच्च बाल लिंगानुपात वाले प्रखंडों की संख्या में कमी आई। वर्ष 2001 में नौ प्रखंड मध्यम श्रेणी में थे, जबकि वर्ष 2011 में इनकी संख्या बढ़कर दस प्रखंड हो गई। इससे संकेत मिलता है कि कई प्रखंड उच्च श्रेणी से मध्यम श्रेणी में आ गए। गोपालपुर, पीरपैंती, कहलगाँव, गोराडीह, सन्हौला, सबौर, सुल्तानगंज, नाथनगर, नारायणपुर तथा जगदीशपुर इस श्रेणी में सम्मिलित हैं। यह दर्शाता है कि जिले के अधिकांश प्रखंडों का बाल लिंगानुपात मध्यम स्तर पर केंद्रित रहा।

निम्न श्रेणी में वर्ष 2001 में केवल तीन प्रखंड थे, जबकि वर्ष 2011 में इनकी संख्या बढ़कर चार प्रखंडों गई। इस्माइलपुर, खरीक, नवगछिया तथा शाहकुंड इस श्रेणी में सम्मिलित हैं। विशेष रूप से इस्माइलपुर, जो वर्ष 2001 में 1050 के साथ सर्वाधिक बाल लिंगानुपात वाला प्रखंड था, वर्ष 2011 में 918 के साथ निम्न श्रेणी में पहुँच गया। इसी प्रकार खरीक भी उच्च श्रेणी से निम्न श्रेणी में आ गया। इसके विपरीत बिहपुर वर्ष 2001 में निम्न श्रेणी (946) में था, लेकिन वर्ष 2011 में 963 के साथ उच्च श्रेणी में पहुँच गया। यह परिवर्तन प्रखंडों के मध्य बाल लिंगानुपात के क्षेत्रीय स्वरूप में महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 में उच्च एवं निम्न श्रेणी के प्रखंडों की संख्या क्रमशः 4 और 3 थी, जबकि वर्ष 2011 में यह संख्या घटकर 2 और बढ़कर 4 हो गई। दूसरी ओर, मध्यम श्रेणी में प्रखंडों की संख्या 9 से बढ़कर 10 हो गई। इससे स्पष्ट है कि अध्ययन अवधि के दौरान अधिकांश प्रखंड मध्यम स्तर की श्रेणी में केंद्रित हो गए तथा उच्च श्रेणी के प्रखंडों की संख्या में कमी आई। उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात के आधार पर प्रखंडों के मध्य क्षेत्रीय भिन्नताएँ विद्यमान रहीं। यद्यपि अधिकांश प्रखंड मध्यम श्रेणी में रहे, फिर भी कुछ प्रखंडों की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। विशेष रूप से इस्माइलपुर एवं खरीक में बाल लिंगानुपात की स्थिति में गिरावट तथा

बिहपुर में सुधार देखने को मिला। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात का वितरण प्रखंडवार समान नहीं है तथा समय के साथ इसकी क्षेत्रीय संरचना में परिवर्तन हुआ है।

7. सुझाव

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में वर्ष 2001 से 2011 के मध्य बाल लिंगानुपात में समग्र गिरावट तथा प्रखंडों के मध्य उल्लेखनीय क्षेत्रीय विषमताएँ विद्यमान हैं। अतः जिन प्रखंडों में बाल लिंगानुपात अपेक्षाकृत कम है, वहाँ विशेष रूप से जन-जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे समाज में बालिका के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। कन्या भ्रूण हत्या एवं लिंग चयन जैसी कुप्रथाओं पर प्रभावी नियंत्रण हेतु पूर्व गर्भाधान एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीक (PCPNDT) अधिनियम का कठोरता से पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। साथ ही, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', सुकन्या समृद्धि योजना तथा अन्य महिला एवं बाल विकास संबंधी योजनाओं का प्रभावी एवं लक्षित क्रियान्वयन विशेष रूप से निम्न बाल लिंगानुपात वाले प्रखंडों में किया जाना आवश्यक है। बालिका शिक्षा, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं तथा पोषण संबंधी सुविधाओं का विस्तार कर बालिकाओं के समग्र विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, पंचायतों, स्थानीय प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा सामुदायिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी से लैंगिक समानता के प्रति सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। भविष्य में बाल लिंगानुपात को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कारकों का प्रखंड स्तर पर विस्तृत अध्ययन किया जाना चाहिए, जिससे क्षेत्र-विशिष्ट नीतियाँ एवं योजनाएँ तैयार की जा सकें। इन उपायों के प्रभावी क्रियान्वयन से भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात में सुधार के साथ-साथ लैंगिक समानता एवं समावेशी सामाजिक विकास को भी सुदृढ़ किया जा सकेगा।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्ष 2001 से 2011 के मध्य भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात में समग्र रूप से गिरावट दर्ज की गई। यद्यपि जिले का औसत बाल लिंगानुपात राष्ट्रीय स्तर की तुलना में अपेक्षाकृत संतोषजनक रहा, फिर भी अधिकांश प्रखंडों में नकारात्मक परिवर्तन चिंता का विषय है। अध्ययन अवधि में केवल बिहपुर प्रखंड में बाल लिंगानुपात में सुधार हुआ, जबकि अन्य 15 प्रखंडों में गिरावट दर्ज की गई। विशेष रूप से इस्माइलपुर, खरीक एवं सन्हौला जैसे प्रखंडों में अत्यधिक कमी यह संकेत देती है कि इन क्षेत्रों में लैंगिक असमानता, सामाजिक दृष्टिकोण, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता तथा सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में अभी भी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। स्थानिक विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि बाल लिंगानुपात का वितरण सभी प्रखंडों में समान नहीं है। वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में उच्च श्रेणी वाले प्रखंडों की संख्या में कमी तथा निम्न श्रेणी वाले प्रखंडों की संख्या में वृद्धि हुई, जिससे क्षेत्रीय विषमताएँ और अधिक स्पष्ट हुईं। इससे यह सिद्ध होता है कि बाल लिंगानुपात केवल जनांकिकीय सूचक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का भी महत्वपूर्ण संकेतक है। अतः प्रखंड-विशिष्ट योजनाओं एवं लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से लैंगिक संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है। अंततः यह अध्ययन भागलपुर जिले में बाल लिंगानुपात के स्थानिक प्रतिरूप एवं दशकीय परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है तथा यह दर्शाता है कि प्रखंडवार क्षेत्रीय विषमताओं को ध्यान में रखकर योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं तथा स्थानीय प्रशासन के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है, जिससे बालिका कल्याण, लैंगिक समानता एवं संतुलित क्षेत्रीय विकास की दिशा में अधिक प्रभावी रणनीतियाँ तैयार की जा सकती हैं।

संदर्भ सूची

1. Bose, A. (2001). Fighting Female Foeticide: Growing Greed and Shrinking Child Sex Ratio. Economic and Political Weekly, 36(36), 8 September, p. 3429.
2. Census of India (2001). District Census Handbook: Bhagalpur. Series 11, Part XII-A & B. Patna: Directorate of Census Operations, Bihar, Government of India.
3. Census of India (2011). District Census Handbook: Bhagalpur. Series 11, Part XII-A & B. Patna: Directorate of Census Operations, Bihar, Government of India.
4. Chandna, R.C. (2010). Introduction to Population Geography. New Delhi: Kalyani Publishers.
5. Krishnaji, N. (2000). Trends in Sex Ratio: A Review in Tribute to Ashok Mitra. Economic and Political Weekly, 35(14), pp. 1161–1163.
6. Mazumdar, V. (2000). Family Planning and Female Foeticide. Economic and Political Weekly, 35(44–45), pp. 3958–3966.
7. Vansiya, Y.N. (2018). A Trend of Sex Ratio and Child Sex Ratio in Scheduled Tribe Population in India. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 5(11), November.
8. दैपुरिया, क. एवं सिन्हा, र. (2018). भारत में लिंगानुपात की स्थिति का विश्लेषण और इसके प्रावधान का अध्ययन. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 14(2), जनवरी.
9. मिश्रा, स.क. एवं झा, अ.क. (2022). उत्तर बिहार में ग्रामीण-नगरीय शिशु लिंगानुपात का दशकिय वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 10(6), जून.
10. Singh, R., &Kaur, R. (2017). District variations in sex ratio in Bihar: A spatial approach. Geo Journal, 82(4), 879–896.
11. Kumar, A., &Pandey, A. (2019). Urbanisation and sex ratio: State-level evidence from India. Urban Studies, 56(14), 3024–3041.
12. Kumar, P. and Yadav, S. (2026). Spatio -Temporal Trends in Sex Ratio and Child Sex Ratio in Bihar with Special Reference to Urban Areas. Adhyapan (Peer Reviewed Multidisciplinary Journal), 7(1), ISSN: 2321-2195; E-ISSN: 2582-824X.